मंडल सिद्धांत

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र के छठे अधिकरण में मंडल सिद्धांत का वर्णन किया है। दूसरे राज्यों के साथ व्यवहार के संबंध में आचार्य कौटिल्य ने दो सिद्धांतों का विवेचन किया है -पड़ोसी राज्यों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए मंडल सिद्धांत और अन्य राज्यों के साथ व्यवहार निश्चित करने के लिए षाड्गुण्य नीति।

मंडल का अर्थ है "देशों का समूह". उन्होंने मंडल में 12 प्रकार के देशों का जिक्र किया है-'विजिगीषु', 'अरि', 'मित्र', 'अरि-मित्र', 'मित्र-मित्र', 'अरि-मित्र-मित्र', 'पार्ष्णिग्राह', 'आक्रंद', 'पार्ष्णिग्राहसार', 'आक्रन्दसार', 'मध्यमा' तथा 'उदासीन' देश। उन्होंने मंडल के इन सभी देशों के एक दूसरे के साथ संबंधों को ही मंडल सिद्धांत का नाम दिया है।

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत भौगोलिक आधार पर यह दर्शाता है कि किस प्रकार विजय की इच्छा रखने वाले राज्य के पड़ोसी देश (राज्य) उसके मित्र या शत्रु हो सकते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार मंडल के केन्द्र में एक ऐसा राजा होता है, जो अन्य राज्यों को जीतने का इच्छुक है, इसे "विजीगीषु" कहा जाता है। जबकि अरि, मित्र, अरि मित्र, मित्र-मित्र और अरिमित्र -मित्र यानी पांच राज्य विजीगीषु के सम्मुख तथा पार्ष्णिग्राह आक्रंद, 'पार्ष्णिग्राहसार तथा आक्रन्दसार यानी चार राज्य के पृष्ठ भाग में होते हैं। शेष दो राज्य मध्यम तथा उदासीन उसके एक तरफ स्थित होते हैं इन सभी राज्यों का चरित्र इस प्रकार है-

- **विजीगीषु** - विजीगीषु राज्य वह है जो अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करने का आकांक्षी हो। यह मंडल के केंद्र में स्थित होता है।

Scanned with CamScanner

- **अरि-** विजीगीषु की सीमा पर स्थित राज्य उसका शत्रु होता है, इसीलिए यह अरि राज्य होता है।

- **मित्र-** अरि राज्य के सामने का राज्य मित्र होता है क्योंकि वह और राज्य का शत्रु होने के कारण स्वाभाविक रूप से विजीगीषुका मित्र होता है।

- **अरिमित्र-** मित्र के आगे वाला राज्य अरिमित्र होता है क्योंकि वह अरि राज्य का मित्र तथा विजीगीषु का शत्रु होता है।

- **मित्र-मित्र** - अरि मित्र के सामने वाला राज्य मित्र- मित्र होता है क्योंकि वह मित्र राज का मित्र होता है इसलिए विजीगीषु का भी मित्र होता है।

- **अरिमित्र-मित्र** - अरिमित्र-मित्र राज्य अरिमित्र राज्य का मित्र राज्य होता है इसलिए वह विजीगीषु का शत्रु राज्य होता है।

- **पार्ष्णिग्राह-** विजीगीषु के पृष्ठ में स्थित राज्य पार्ष्णिग्राह कहलाता है ।यह राज्य अरि राज्य की तरह विजीगीषु का शत्रु होता है।

- **आक्रंद-** पार्ष्णिग्राह राज्य के पीछे स्थित राज्य आक्रंद कहलाता है। यह राज्य विजीगीषु का मित्र राज्य होता है।

Scanned with CamScanner

- **पार्ष्णिग्राहसार-** पार्ष्णिग्राहसार राज्य पार्ष्णिग्राह का मित्र राज्य होता है। तथा आक्रंद राज्य के पृष्ठ भाग पर स्थित होता है। यह विजीगीषु का शत्रु राज्य होता है।

- **आक्रन्दसार-** पार्ष्णिग्राहसार के पीछे स्थित राज्य आक्रन्दसार कहलाता है। यह राज्य आक्रंद राज्य का मित्र होने के कारण विजीगीषु का भी मित्र होता है।

- **मध्यम-** इस प्रकार का राज्य ऐसा राज्य होता है जो विजीगीषु तथा अरि दोनों ही प्रकार के राज्यों की सीमाओं से अलग स्थित होता है। यह राज्य दोनों से अधिक शक्तिशाली होने के साथ ही जरूरत पड़ने पर वह इन दोनों में से किसी की भी सहायता कर सकता है या दोनों का मुकाबला भी कर सकता है।

- **उदासीन-** इस प्रकार का राज्य विजीगीषु, अरि एवं मध्यम राज्य की सीमाओं से अलग होता है। यह राज्य अति शक्तिसंपन्न राज्य होता है और अपनी इच्छा अनुसार इन तीनों राज्यों में से किसी की भी आवश्यकता होने पर सहायता कर सकता है।

कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धांत को निम्न डायग्राम के द्वारा समझा जा सकता है

Scanned with CamScanner

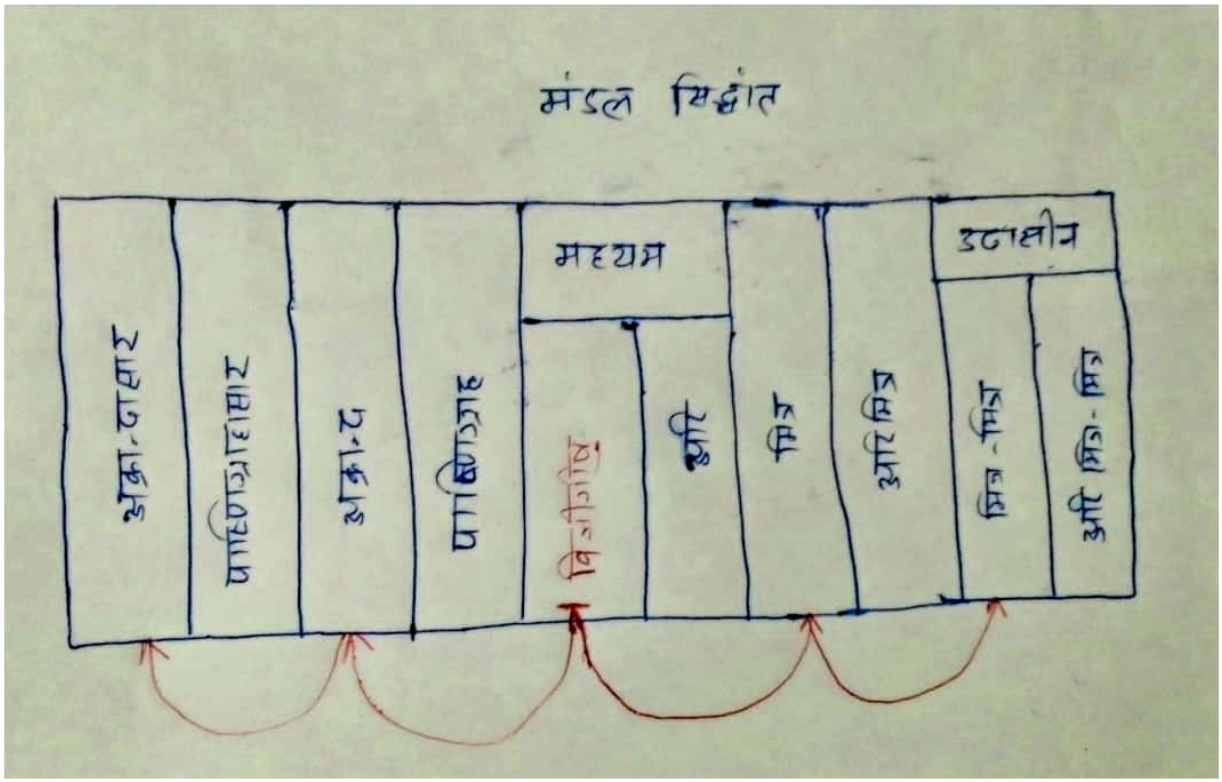

इस प्रकार हम देखते हैं कि कौटिल्य ने मंडल सिद्धांत के द्वारा यह परिभाषित करने की पूरी कोशिश की है कि किसी राज्य विशेष का कौन सा राज्य मित्र हो सकता है तथा कौन सा शत्रु हो सकता है।कौटिल्य के अनुसार यह सिद्धांत यह भी बताता है कि एक राज्य को दूसरे राज्य के साथ किस तरह का संबंध रखना चाहिए तथा अपने अंतरराष्ट्रीय संबंधों और नीतियों का निर्धारण किस तरह करना चाहिए।

आलोचना- कौटिल्य के मंडल सिद्धांत का तात्कालिक महत्व तो था लेकिन परिस्थितियां बदल जाने पर उसकी उपयोगिता नहीं रही। इस आधार पर राजनीतिक चिंतक कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत की आलोचना करते हैं। वास्तव में देखा जाए तो कौटिल्य के मंडल सिद्धांत को सिर्फ इसी आधार पर खारिज नहीं किया जा सकता

Scanned with CamScanner

अंतरराष्ट्रीय संबंधों की दृष्टि से यह सिद्धांत आज भी तमाम ऐसे तथ्यों की ओर संकेत करता है जो आधुनिक राज्यों का मार्गदर्शन करता है।इसके अलावा या सिद्धांत या भी बदल आता है कि विश्व शांति को बनाए रखने के लिए शक्ति का संतुलन परम आवश्यक है।राष्ट्रों में ऐसे गुण होने चाहिए जो शक्ति में एक दूसरे को एक दूसरे के समान हो ऐसी स्थिति में एक शक्तिशाली राष्ट्र या गुट अपने समान शक्ति वाले दूसरे राष्ट्र या गुट पर कतई आक्रमण नहीं करेगा एक राष्ट्र की सीमा पर स्थित राष्ट्र उसके अंतर राज्य संबंधों की स्थापना और संचालन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है इसके अलावा यह सिद्धांत या भी बदल आता है कि एक राष्ट्र की सीमा पर स्थित अन्य राष्ट्र प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी न किसी रूप से उसके प्रति शत्रु का भाव रखते हैं वर्तमान समय में पड़ोसी राज्यों की स्थिति को देखते हुए यह सिद्धांत आज भी उचित लगता है भारत पाकिस्तान तथा चीन के आपसी संबंध इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। इस तरह देखा जाए तो कौटिल्य का सिद्धांत उसके समय में ही नहीं बल्कि वर्तमान समय में भी काफी महत्वपूर्ण है

Scanned with CamScanner